

विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. संजीव कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर

प्रेम प्रकाश गुप्ता इंस्टीट्यूट फरीदपुर, बरेली, उत्तरप्रदेश ।

Email: Sanjeevsharma.abc@gmail.com



Received 05 August 2026

Accepted 10 August 2026

Published 17 August 2026

Corresponding Author:

डॉ. संजीव कुमार

Email: Sanjeevsharma.abc@gmail.com

DOI: <https://doi.org/10.64880/pcjaict.v1i4.05>

Funding: This research received no specifics grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sector.

Copyright: © 2026 The Author(s).



This is an open access article under the [Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

OPEN ACCESS

शोध सार:

सामाजिक बुद्धि (Social Intelligence) व्यक्ति की वह क्षमता है जिसके माध्यम से वह अन्य व्यक्तियों की भावनाओं, विचारों, उद्देश्यों तथा सामाजिक परिस्थितियों को समझकर प्रभावी एवं संतुलित व्यवहार करता है। वर्तमान समय में विद्यालयी शिक्षा का उद्देश्य केवल शैक्षिक उपलब्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में जीवन-कौशल, नेतृत्व क्षमता, सहयोग, सहानुभूति तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना भी है। कक्षा 12 के विद्यार्थी किशोरावस्था के अंतिम चरण में होते हैं, जहाँ उनके व्यक्तित्व, सामाजिक व्यवहार एवं निर्णय क्षमता का तीव्र विकास होता है। अतः इस स्तर पर सामाजिक बुद्धि का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य कक्षा 12 के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का विश्लेषण करना है। प्रस्तुत अध्ययन विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन हेतु 100 विद्यार्थियों का चयन सरल यादृच्छिक निदर्शन विधि द्वारा किया गया। सामाजिक बुद्धि प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि अधिकांश विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि मध्यम स्तर की है तथा छात्र एवं छात्राओं के मध्य सामाजिक बुद्धि के औसत अंकों में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। प्रस्तुत अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि विद्यालयों में सहयोगात्मक अधिगम, समूह गतिविधियों, जीवन-कौशल शिक्षा तथा सामाजिक सहभागिता से विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का प्रभावी विकास किया जा सकता है।

मुख्य शब्द: सामाजिक बुद्धि, संतुलित व्यवहार, शैक्षिक उपलब्धि, जीवन-कौशल, नेतृत्व क्षमता ।

1. भूमिका (Introduction)-

मनुष्य जन्म से सामाजिक प्राणी है और उसका व्यक्तित्व समाज के साथ निरंतर अंतःक्रिया के माध्यम से विकसित होता है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि ऐसे नागरिक तैयार करना है जो सामाजिक रूप से उत्तरदायी, संवेदनशील, सहयोगी तथा नैतिक मूल्यों से युक्त हों। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों के समग्र विकास (Holistic Development) पर विशेष बल दिया जा रहा है, जिसमें बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक तथा नैतिक विकास समान रूप से महत्वपूर्ण माने जाते हैं। आज का समाज तीव्र तकनीकी परिवर्तन, वैश्वीकरण, सोशल मीडिया, डिजिटल संचार तथा प्रतिस्पर्धात्मक जीवन शैली से प्रभावित है। इन परिस्थितियों में विद्यार्थियों के लिए केवल शैक्षिक ज्ञान

पर्याप्त नहीं है। उन्हें विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में उचित निर्णय लेने, दूसरों के साथ प्रभावी संवाद स्थापित करने, मतभेदों का समाधान करने तथा सहयोगात्मक वातावरण में कार्य करने की क्षमता भी विकसित करनी होती है। यही क्षमता सामाजिक बुद्धि कहलाती है।

सामाजिक बुद्धि व्यक्ति को दूसरों की भावनाओं, आवश्यकताओं तथा व्यवहार को समझने और उसके अनुरूप उपयुक्त प्रतिक्रिया देने में सक्षम बनाती है। सामाजिक बुद्धि का उच्च स्तर व्यक्ति को सफल नेतृत्वकर्ता, प्रभावी संचारक तथा उत्तरदायी नागरिक बनने में सहायता करता है। इसके विपरीत सामाजिक बुद्धि का निम्न स्तर सामाजिक समायोजन की कठिनाइयों, संचार संबंधी समस्याओं तथा पारस्परिक संबंधों में तनाव उत्पन्न कर सकता है।

सामाजिक बुद्धि की अवधारणा का सर्वप्रथम प्रतिपादन **Edward L. Thorndike (1920)** ने किया। उन्होंने सामाजिक बुद्धि को "दूसरों को समझने तथा उनके साथ बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवहार करने की क्षमता" बताया। बाद में Howard Gardner ने अपने बहुबौद्धिकता सिद्धांत में अंतरव्यक्तिक बुद्धि को विशेष महत्व दिया। Daniel Goleman ने सामाजिक बुद्धि को मानवीय संबंधों की सफलता का आधार माना और बताया कि सामाजिक बुद्धि केवल ज्ञान नहीं, बल्कि व्यवहार में प्रकट होने वाली क्षमता है।

कक्षा 12 के विद्यार्थियों का चयन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जीवन का संक्रमणकाल है। इसी समय विद्यार्थी उच्च शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं, व्यावसायिक जीवन तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों की ओर अग्रसर होते हैं। इस अवस्था में सामाजिक बुद्धि का स्तर उनके आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, समूह में कार्य करने की योग्यता तथा भविष्य की सफलता को प्रभावित करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) में भी जीवन-कौशल, संचार कौशल, सहयोगात्मक अधिगम, नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास पर विशेष बल दिया गया है। इसलिए सामाजिक बुद्धि का अध्ययन केवल मनोवैज्ञानिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि शैक्षिक नीति और विद्यालयी व्यवहार के संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक है।

इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध कक्षा 12 के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है, जिससे यह समझने में सहायता मिलेगी कि विद्यार्थियों का सामाजिक विकास किस स्तर पर है तथा विद्यालय स्तर पर उसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए किन उपायों की आवश्यकता है।

3. समस्या का कथन (Statement of the Problem)-

"कक्षा 12 के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर विश्लेषणात्मक अध्ययन।"

4. अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य (Need and Significance of the Study)-

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को सामाजिक रूप से दक्ष, उत्तरदायी एवं नैतिक नागरिक बनाना भी है। किशोरावस्था में विद्यार्थियों का सामाजिक व्यवहार तीव्र गति से विकसित होता है। यदि इस अवस्था में उनकी सामाजिक बुद्धि का सही आकलन किया जाए, तो उनके व्यक्तित्व विकास हेतु उपयुक्त शैक्षिक कार्यक्रम तैयार किए जा सकते हैं।

यह अध्ययन निम्न कारणों से महत्वपूर्ण है—

1. विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के वास्तविक स्तर की जानकारी प्राप्त होगी।
2. विद्यालयों में सामाजिक एवं जीवन-कौशल आधारित कार्यक्रमों की आवश्यकता स्पष्ट होगी।
3. शिक्षकों को विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार को समझने में सहायता मिलेगी।
4. अभिभावकों को सामाजिक विकास के महत्व का बोध होगा।
5. शिक्षा नीति एवं विद्यालय प्रशासन के लिए उपयोगी सुझाव प्राप्त होंगे।
6. भविष्य के शोधकर्ताओं को इस क्षेत्र में आगे अनुसंधान करने का आधार मिलेगा।

5. अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)-

1. कक्षा 12 के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का अध्ययन करना।
2. छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि की तुलना करना।
3. सामाजिक बुद्धि के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करना।
4. विद्यार्थियों के सामाजिक बुद्धि स्तर (उच्च, मध्यम एवं निम्न) का वर्गीकरण करना।
5. सामाजिक बुद्धि के विकास हेतु शैक्षिक सुझाव प्रस्तुत करना।

6. परिकल्पनाएँ (Hypotheses)-

- 1- कक्षा 12 के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं है।
- 2- अधिकांश कक्षा 12 के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि मध्यम स्तर की है।
- 3- सामाजिक बुद्धि के विभिन्न आयामों के औसत प्राप्तांकों में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं है।

7. शोध विधि (Research Methodology)-

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) शोध विधि का उपयोग किया गया है। यह अध्ययन सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित है, क्योंकि इसमें विद्यार्थियों से मानकीकृत मनोवैज्ञानिक मापनी के माध्यम से आँकड़े एकत्रित किए गए।

8. अध्ययन की जनसंख्या (Population)-

इस अध्ययन की जनसंख्या बरेली जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 12 के विद्यार्थी हैं।

9. निदर्शन (Sample)-

अध्ययन के लिए 100 विद्यार्थियों का चयन सरल यादृच्छिक निदर्शन (Simple Random Sampling) द्वारा किया गया।

नमूने का विवरण—

वर्ग	संख्या
छात्र	50
छात्राएँ	50
कुल	100

10. शोध उपकरण (Research Tool)-

इस अध्ययन में N. K. Chadha एवं Usha Ganesan द्वारा विकसित Social Intelligence Scale का उपयोग किया गया। यह एक मानकीकृत मनोवैज्ञानिक मापनी है, जिसका उद्देश्य व्यक्तियों की सामाजिक बुद्धि के विभिन्न आयामों का आकलन करना है।

11- अध्ययन की सीमाएँ (Limitations of the Study)-

1. अध्ययन केवल 100 विद्यार्थियों तक सीमित रहा।
2. अध्ययन केवल कक्षा 12 के विद्यार्थियों पर आधारित है।
3. अध्ययन बरेली जिले के विद्यालयों तक सीमित है।
4. सामाजिक बुद्धि के मापन हेतु केवल एक मानकीकृत मापनी का उपयोग किया गया।
5. अध्ययन में सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि जैसे अन्य कारकों का पृथक विश्लेषण नहीं किया गया।

12- साहित्य समीक्षा (Review of Related Literature)-

किसी भी शोध की वैज्ञानिकता उसके सैद्धांतिक आधार एवं पूर्ववर्ती अध्ययनों के विश्लेषण पर निर्भर करती है। साहित्य समीक्षा शोधकर्ता को यह समझने में सहायता करती है कि संबंधित विषय पर पूर्व में क्या कार्य हुआ है, किन निष्कर्षों तक पहुँचा गया है तथा वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता क्यों है।

13. आँकड़ों का विश्लेषण-

शोध में संकलित आँकड़ों का विश्लेषण माध्य (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation), प्रतिशत तथा t -परीक्षण द्वारा किया गया। परिणामों को निम्नलिखित तालिकाओं में प्रस्तुत किया गया है।

उद्देश्य-1

कक्षा 12 के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के स्तर का अध्ययन

तालिका-1 : सामाजिक बुद्धि के स्तर का वर्गीकरण

सामाजिक बुद्धि का स्तर	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
उच्च	24	24%
मध्यम	58	58%
निम्न	18	18%
कुल	100	100%

व्याख्या

तालिका-1 से स्पष्ट होता है कि 100 विद्यार्थियों में से 24 (24%) विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि उच्च स्तर की, 58 (58%) विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि मध्यम स्तर की तथा 18 (18%) विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि निम्न स्तर की पाई गई।

इस प्रकार अधिकांश विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि **मध्यम स्तर** की है। इससे स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों में सामाजिक व्यवहार, सहयोग, समायोजन एवं संचार कौशल का विकास हो रहा है, किन्तु इसे और अधिक सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है।

उद्देश्य-2

छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि की तुलना-

तालिका-2 : छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक बुद्धि प्राप्तांकों की तुलना

वर्ग	संख्या	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	t-मूल्य
छात्र	50	94.82	8.46	
छात्राएँ	50	96.34	7.92	1.08

सारणीकृत t -मूल्य (0.05 स्तर) = 1.98

व्याख्या

तालिका-2 के अनुसार छात्रों का औसत प्राप्तांक 94.82 तथा छात्राओं का औसत प्राप्तांक 96.34 है। प्राप्त t -मूल्य 1.08 है, जो 0.05 स्तर पर सारणीकृत t -मूल्य (1.98) से कम है।

अतः दोनों समूहों के मध्य सामाजिक बुद्धि में **सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया।**

निष्कर्ष: प्रथम शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

उद्देश्य-3

सामाजिक बुद्धि के विभिन्न आयामों का विश्लेषण-

तालिका-3 : सामाजिक बुद्धि के आयामों का औसत प्राप्तांक

आयाम	माध्य
धैर्य	12.60
सहयोग	13.84
आत्मविश्वास	12.92
संवेदनशीलता	13.41
सामाजिक वातावरण की समझ	13.16
व्यवहार-कुशलता	12.48
हास्य-बोध	11.94
स्मृति	12.73

व्याख्या

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों ने सहयोग एवं संवेदनशीलता के आयामों में अपेक्षाकृत अधिक अंक प्राप्त किए, जबकि हास्य-बोध एवं व्यवहार-कुशलता के आयामों में औसत अपेक्षाकृत कम रहा।

इससे यह संकेत मिलता है कि विद्यार्थी सहयोगी एवं संवेदनशील तो हैं, परंतु सामाजिक परिस्थितियों में व्यवहारिक दक्षता तथा सहज संवाद क्षमता को और विकसित करने की आवश्यकता है।

उद्देश्य-4

सामाजिक बुद्धि के आधार पर विद्यार्थियों का वर्गीकरण-

तालिका-4 : औसत सामाजिक बुद्धि प्राप्तांक

सांख्यिकीय माप	मान
माध्य (Mean)	95.58
मानक विचलन (SD)	8.21
न्यूनतम अंक	74
अधिकतम अंक	114

व्याख्या

तालिका-4 से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों का औसत सामाजिक बुद्धि प्राप्तांक 95.58 है तथा मानक विचलन 8.21 है। इससे स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थियों के अंक औसत के आसपास केंद्रित हैं तथा समूह में अत्यधिक विचलन नहीं है।

12. परिकल्पनाओं का परीक्षण-

परिकल्पना-1

छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिणाम: शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

परिकल्पना-2

अधिकांश विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि मध्यम स्तर की है।

तालिका-1 के अनुसार 58% विद्यार्थी मध्यम स्तर में पाए गए।

परिणाम: परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

परिकल्पना-3

सामाजिक बुद्धि के विभिन्न आयामों में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं है।

आयामों के औसत प्राप्तांकों में केवल मामूली अंतर पाया गया, जो व्यावहारिक दृष्टि से बहुत अधिक नहीं है।

परिणाम: यह परिकल्पना भी स्वीकार की जाती है।

14. प्रमुख निष्कर्ष (Major Findings)

प्रस्तुत अध्ययन में N. K. Chadha एवं Usha Ganesan द्वारा विकसित Social Intelligence Scale के माध्यम से कक्षा 12 के 100 विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का अध्ययन किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त हुए—

1. अधिकांश (58%) विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि **मध्यम स्तर** की पाई गई।
2. 24% विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि उच्च स्तर की तथा 18% विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि निम्न स्तर की पाई गई।
3. छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि के औसत प्राप्तांकों में सांख्यिकीय रूप से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
4. सामाजिक बुद्धि के आयामों में **सहयोग (Cooperativeness)** एवं **संवेदनशीलता (Sensitivity)** अपेक्षाकृत अधिक विकसित पाई गई।
5. **व्यवहार-कुशलता (Tactfulness)** तथा **हास्य-बोध (Sense of Humour)** के आयामों में अपेक्षाकृत कम अंक प्राप्त हुए।
6. अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के सामाजिक विकास में सकारात्मक भूमिका निभा रहा है, किंतु सामाजिक कौशलों के विकास के लिए और अधिक योजनाबद्ध प्रयास अपेक्षित हैं।

15. शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications)-

अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ सामने आते हैं—

1. विद्यालयों में सामाजिक बुद्धि के विकास के लिए नियमित जीवन-कौशल (Life Skills) कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
2. विद्यार्थियों को समूह-अधिगम (Cooperative Learning) एवं परियोजना-आधारित शिक्षण में अधिक अवसर दिए जाएँ।
3. विद्यालयों में नेतृत्व विकास, वाद-विवाद, भाषण, नाटक एवं सामुदायिक सेवा जैसी गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाए।
4. शिक्षक विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का निरंतर अवलोकन करें तथा आवश्यकतानुसार परामर्श प्रदान करें।
5. विद्यालयों में संचार-कौशल एवं व्यक्तित्व विकास कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए।
6. अभिभावकों को भी बच्चों के सामाजिक विकास में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया जाए।
7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप सामाजिक एवं भावनात्मक अधिगम (Social and Emotional Learning) को विद्यालयी पाठ्यक्रम में प्रभावी रूप से समाहित किया जाए।

8. संदर्भ सूची-

1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT). (2023). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा-2023 (विद्यालयी शिक्षा)*. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
2. यादव, एस. के. (2022). *विद्यालयी शिक्षा में जीवन कौशल एवं व्यक्तित्व विकास*. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
3. शर्मा, आर. ए. (2021). *शिक्षा अनुसंधान*. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।

4. अग्रवाल, जे. सी. (2021). *शिक्षा मनोविज्ञान*. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
5. मिश्रा, आर. सी. (2021). *शिक्षा का मनोविज्ञान*. नई दिल्ली: एटलांटिक पब्लिशर्स।
6. त्रिपाठी, एम. पी. (2021). *किशोर मनोविज्ञान एवं शिक्षा*. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
7. पाण्डेय, के. पी. (2020). *शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक मापन और मूल्यांकन*. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
8. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020*. नई दिल्ली: भारत सरकार।
9. भटनागर, आर. पी., एवं अग्रवाल, विद्या. (2020). *शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ*. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
10. कोठारी, सी. आर. (2019). *अनुसंधान पद्धति: विधियाँ एवं तकनीकें* (हिंदी संस्करण). नई दिल्ली: न्यू एज इंटरनेशनल।
11. शर्मा, एस. आर. (2019). *शिक्षा मनोविज्ञान एवं अधिगम*. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
12. चौधरी, एस. पी. (2019). *शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी*. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।

➤ Google Scholar, Shodh Ganga, ERIC, INFLIBNET.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.